अंक
जुलाई, 2022

डिजिटल न्यूजलेटर

पुनर्नवा

आशाओं के दीप.....हौसले का सूरज

बिहार राज्य आपदा प्रबंधन प्राधिकरण

आपदा प्रबंधन विभाग, बिहार सरकार

बाढ़ : सुरक्षा अपने हाथ

बिहार देश के सर्वाधिक बाढ़ग्रस्त राज्यों में से एक है। राज्य के कुल 28 जिले बाढ़ से प्रभावित होते हैं। इनमें 15 जिलों में बाढ़ से जान–माल की ज्यादा क्षति होती है। राज्य की कुल आबादी के लगभग 76 प्रतिशत लोग इन जिलों में निवास करते हैं। इसके अतिरिक्त मौजूदा समय में शहरों में बाढ़ या जलजमाव (अर्बन फ्लडिंग) की समस्या धीरे–धीरे विकराल रूप धारण करती जा रही है। निम्नलिखित उपाय कर बाढ़ से होनेवाले नुकसान को कम किया जा सकता है :

क्या करें :

1. घर के सभी सदस्यों को नजदीकी सुरक्षित आश्रय की जानकारी हो।
2. आपातकालीन किट हमेशा अपने पास रखें, जिसमें एक छोटा रेडियो, टॉर्च, बैटरी, मजबूत रस्सी, माचिस, मोमबत्ती, पीने का पानी, सूखा भोजन, आवश्यक दवाइयां आदि हो।
3. चेतावनी व सुझाव के लिए रेडियो सुनें या टीवी देखें। स्थानीय अधिकारियों की चेतावनी पर ध्यान दें। अफवाह पर ध्यान ना दें।
4. बाढ़ के दौरान खाना ढंक कर रखें। हल्का भोजन करें एवं उबला हुआ पानी पियें।
5. दस्त होने पर चावल का पानी, नारियल पानी आदि का सेवन करें। ओआरएस व अन्य उपचार के लिए स्वास्थ्य केंद्र से संपर्क करें।
6. गर्म कपड़े, जरूरी दवाएं, कीमती वस्तुएं, महत्वपूर्ण दस्तावेज आदि को पॉलिथीन या वाटरप्रूफ बैग में अपने साथ रख लें।
7. पानी को उबालकर तब तक पियें जब तक कि संबंधित विभाग द्वारा हैलोजन की गोलियां पानी में डालने के लिए उपलब्ध न करा दी जाए।
8. सांपों एवं अन्य जहरीले जंतुओं से बचकर रहें, बच्चों को बाढ़ के पानी के पास खेलने से रोकें।

क्या न करें :

1. अगर पानी की गहराई की जानकारी ना हो तो उसे कभी भी पार करने की कोशिश ना करें।
2. ऐसे किसी भी खाद्य पदार्थ का सेवन न करें जो बाढ़ के पानी से प्रभावित हुआ हो।

विषय सूची

		पे.नं.
1	संपादकीय	4
2	आमुख : नदियों के साथ जीना सीख लें	5
3	गतिविधियां : बाढ़ प्रबंधन प्लेटफॉर्म की बैठक	9
4	सुरक्षित तैराकी कार्यक्रम को लेकर युवाओं में उत्साह	10
5	डूबने की घटनाओं का अध्ययन करेगी विशेषज्ञ एजेंसी	11
6	प्रखंडों में भूकंप सुरक्षा क्लीनिक की होगी स्थापना	12
7	विपदा में साथ खड़े मिलेंगे 'आपदा मित्र'	13
8	आपदा मित्र राष्ट्रीय कार्यशाला में सहभागिता	14
9	आपदा में कैसे करें पशुओं की सुरक्षा व देखभाल	15
10	पुलिस व प्रशासनिक अधिकारियों को आपदा प्रबंधन की दी जानकारी	16
11	आपदाओं से लड़ने में पुलिस की भूमिका अहम	17
12	चलिए, सम्हल कर.....जान है, तो जहान है !	18
13	दिव्यांगजन आपदा जोखिम न्यूनीकरण समिति की बैठक	19
14	एक नजर में जुलाई माह में हुए कार्यक्रमों की झलक	20
15	अस्पतालों को सुरक्षित बनाने का अभियान जारी	21
16	कोरोना जागरूकता संदेश	22

बिहार राज्य आपदा प्रबंधन प्राधिकरण के मासिक डिजिटल न्यूजलेटर पुनर्नवा के जुलाई, 2022 अंक में क्या है खास

पठनीय और रोचक बनाने का प्रयास किया गया है। आसान भाषा में चीजें समझाई गई है। मास्टहेड से अंग्रेजी के शब्द हटाए गए हैं। कैचलाइन को बदल कर हिन्दी किया गया है – आशाओं के दीप....हौसले का सूरज!

जुलाई बारिश का मौसम है। कवरस्टोरी बाढ़ पर है। संपादकीय में मुद्दा डूबने से होने वाली मौत का उठाया गया है। तस्वीरों का इस्तेमाल ज्यादा किया गया है। इसे पिक्टोरियल बनाने पर जोर था। सुधार अनवरत चलने वाली प्रक्रिया है। आग्रह होगा कि इसे एक बार देखें–पढ़ें और अपने अमूल्य सुझाव जरूर दें।

संपादकीय

विकास ऐसा हो जो आफत से बचाए,
ऐसा न हो जो कि आफत बन जाये।

संरक्षक मंडल

डॉ. उदय कांत मिश्र, भा.अभि.से. (से.नि.)
उपाध्यक्ष, बि.रा.आ.प्र.प्राधिकरण

पी.एन. राय, भा.पु.से. (से.नि.)
सदस्य, बि.रा.आ.प्र.प्राधिकरण

मनीष कुमार वर्मा, भा.प्र.से. (से.नि.)
सदस्य, बि.रा.आ.प्र.प्राधिकरण

मीनेंद्र कुमार, बि.प्र.से.
सचिव, बि.रा.आ.प्र.प्राधिकरण

वरीय संपादक : कुलभूषण कुमार गोपाल
सहायक संपादक : संदीप कमल

संपादक मंडल

वरीय सलाहकार : नीरज कुमार सिंह, दिलीप कुमार।
परियोजना पदाधिकारी : डॉ. जीवन कुमार, अशोक कुमार शर्मा, प्रवीण कुमार।
आई.टी. : सुश्री सुम्बुल अफरोज, मनोज कुमार
ई.मेल.: sr.editor@bsdma.org
वेबसाइटः www.bsdma.org
सोशल मीडिया :
www.facebook.com/bsdma

नोटः– पुनर्नवा में प्रकाशित आलेख लेखकों के व्यक्तिगत एवं अध्ययन स्वरूप विचार हैं। लेखक द्वारा व्यक्त विचारों के लिए बिहार राज्य आपदा प्रबंधन प्राधिकरण उत्तरदायी नहीं है।

आपदा नहीं हो भारी,
यदि पूरी हो तैयारी।

तैराकी का हुनर बचाएगा जान

बरसात का मौसम आते ही खेत–खलिहान प्रकृति के नए रंग में सराबोर हो जाते हैं। कुदरत का नया श्रृंगार चहुंओर दिखाई पड़ता है। सृजन का नया संसार रचने प्रकृति के कुशल चितेरे कल्पनाओं में खो जाते हैं। मिट्टी से सोना उगाने की चाह लिए किसान हल–बैल लेकर निकल पड़ते हैं। कलकल बहती नदियां, लबालब तालाब, हरे–भरे पौधे जीवन में नई ऊर्जा, उम्मीदों का संचार करते हैं। लेकिन मानसून की बारिश हमेशा खुशनुमा नहीं होती। कई बार आफत बनकर भी बरसती हैं।

बाढ़, वज्रपात और शहरों में जलजमाव (अर्बन फ्लडिंग) का कहर हर वर्ष हमें देखने को मिलता है। आपदाएं कई मासूम जानें ले लेती हैं। डूबने से होनेवाली मौतों का सिलसिला लगातार बढ़ रहा है। विभिन्न धार्मिक आयोजनों में नदियों के पवित्र घाटों पर स्नान के क्रम में डूबने से मौत की खबरें आए दिन आती हैं। मानव निर्मित गड्ढों में डूब कर मरनेवालों की तादाद बढ़ी है। राज्य में बड़े पैमाने पर आधारभूत संरचनाओं का निर्माण हो रहा। निर्माण एजेंसियां बड़े–बड़े गड्ढे मिट्टी निकालने के लिए करती हैं। इन्हें फिर खुला छोड़ दिया जाता है। बारिश में इसमें पानी जमा हो जाता है। लोगों को इसकी गहराई का अहसास नहीं होता और अमूमन इन गड्ढों में डूब कर लोग मरते हैं। अफसोसनाक यह कि मरनेवालों में ज्यादातर बच्चे होते हैं। ऐसी कई बेशकीमती जानें थोड़ी जागरूकता व हुनर से बच सकती हैं।

बिहार राज्य आपदा प्रबंधन प्राधिकरण राज्य में डूबने से होनेवाली मौतों को लेकर गंभीर है। इसकी रोकथाम की दिशा में लगातार प्रयास किए जा रहे हैं। सुरक्षित तैराकी एवं जीवनरक्षक कौशल प्रशिक्षण कार्यक्रम प्राधिकरण की ऐसी ही एक कवायद है। इसके तहत अभी तक सैकड़ों युवाओं–किशोरों को तैराकी और जीवन रक्षा का प्रशिक्षण दिया जा चुका है। इन्हें बताया जा रहा कि कोई व्यक्ति अगर डूब रहा है, तो उसे कैसे बचाना है। सुरक्षित निकालने के बाद अस्पताल पूर्व किस तरह की चिकित्सा देनी है। आपदाओं से लड़ने को हमेशा जागरूक और तैयार रहने की जरूरत है। गहरे पानी में और खासकर बरसात में कतई न उतरें। ऐसे जल निकायों के पास चेतावनी संबंधी बोर्ड लगाए जाने चाहिए। बुजुर्गों ने सही कहा है–समझदारी में ही होशियारी है।

बाढ़ : आपदा से लड़ने की तैयारी

नदियों के साथ जीना सीख लें!

–संदीप कमल–

जलवायु परिवर्तन (क्लाइमेट चेंज) का गहरा असर आज हमारे परिवेश, पर्यावरण, पारिस्थितिकी तंत्र. ..हर जगह नजर आता है। सर्दी में गर्मी, गर्मी में बरसात, बरसात में सूखा....साल–दर–साल हमें चौंकाता है। मॉनसून का सही–सही मिजाज भांपना टेढ़ी खीर साबित हो रहा। तेज बारिश गांवों में तबाही लाती है, तो हल्की बारिश में शहर हांफने लगते हैं। बिहार प्रायः हर वर्ष बाढ़ की विनाशलीला झेलता रहा है। उत्तर बिहार के कई जिले बाढ़ और सूखे की मार साथ–साथ झेल रहे होते हैं।

कटावरोधी कार्यों का निरीक्षण करते माननीय मुख्यमंत्री नीतीश कुमार। (फाइल फोटो, साभार : आईपीआरडी)

नदियां, जहां कभी सभ्यताएं पनपीं, जीवन संगीत गूंजा, वही आज हमें लील लेने पर क्यों आमादा है? नदियों की गाद (तलछट) के उर्वर कण ने कभी हमारे पेट भरे, आज यही जंजाल साबित हो रहे। अपने साथ ऊपजाऊ मिट्टी लानेवाली नदियां कचरे का पहाड़ क्यों लाने लगीं, इस पर हमने कभी सोचा नहीं। पर्यावरण के साथ खिलवाड़ का नतीजा सामने है। जंगल सफाचट कर दिए गए, नदियां बेचारी विलेन घोषित कर दी गईं। जीवनदायिनी को ही हम श्राप/शोक मान बैठे। इनका पानी मानो अभिशाप हो गया। वर्ष 1956 में पहली बार संसद में पेश एक रिपोर्ट में आधिकारिक रूप से माना गया कि बाढ़ से होनेवाले नुकसान से पूरी तरह बचना असंभव है। भविष्य में भी इससे छुटकारा मिलना मुश्किल है। पानी की निगरानी करनेवाली संस्था केंद्रीय जल आयोग मानता है कि राज्यों को अपने बाढ़ग्रस्त इलाकों को अलग–अलग जोन में बांटना चाहिए। इससे बाढ़वाले नुकसान को कम किया जा सकेगा। नदियों को भी कुदरती बहाव के रास्ते पर बहने दिया जा सकेगा।

केंद्र सरकार ने वर्ष 1975 में एक नीति – फ्लड प्लेन जोनिंग – तैयार की। इसे राज्यों के साथ साझा किया। इसमें मुख्य तौर पर दो बातें शामिल थी। पहली, तो ये कि बाढ़वाले इलाकों से अतिक्रमण हटाया जाए। दूसरा, ये कि इन क्षेत्रों में जमीन की प्रकृति तय कर इसके इस्तेमाल को रेगुलेट किया जाए। यह भी सत्य है कि डूब क्षेत्र से लोगों को हटाकर कहीं और बसाना बहुत बड़ी चुनौती है।

बाढ़ से निपटने के उपाय

नेपाल से समन्वय : बिहार में बाढ़ के लिए बहुत हद तक नेपाल की नदियों को जिम्मेवार माना जाता है, वहीं नेपाल अपने यहां आनेवाली बाढ़ के लिए भारत को दोषी मानता है। नेपाल की सरकार मानती है कि तराई क्षेत्र में बाढ़ की समस्या सीमा पार भारत में सड़कों, बांधों और तटबंधों का निर्माण होने के कारण आई है। ऐसे में इस त्रासदी से निपटने के अगर साझा प्रयास दोनों देशों की ओर से किए जाएं तो उसके बेहतर नतीजे आ सकते हैं।

सूचना तकनीक का इस्तेमाल : किसी भी आपदा से लड़ाई में सबसे कारगर हथियार बेशक सूचना तकनीक हो सकती है। चक्रवाती तूफान के मामले में ऐसा संभव हो पाया है। बाढ़ में भी संभव है। बिहार राज्य आपदा प्रबंधन प्राधिकार ने उच्चतर तकनीकी संस्थानों के सहयोग से इस दिशा में कारगर पहल की है। वास्तविक समय आंकड़ा संग्रहण प्रणाली (रियल टाइम डेटा कलेक्शन सिस्टम) का सघन उपयोग और ड्रोन तकनीक का इस्तेमाल बाढ़ के पूर्वानुमान में मददगार साबित हो सकता है। ड्रोन की मदद से हाल ही में असम में आई बाढ़ में राहत व बचाव कार्य को बेहतर तरीके से अंजाम दिया जा सका। आईआईटी, गुवाहाटी ने इसमें सहयोग प्रदान किया।

बाढ़ में राहत व बचाव कार्य। (फोटो साभार : एनडीआरएफ)

पूर्व तैयारियां हों पुख्ता : बांध प्रबंधन के तमाम संरचनात्मक और गैर संरचनात्मक उपाय ससमय पूरे किए जाएं। बाढ़ तटबंधों की सुरक्षा–मरम्मत, कटाव रोकने के उपाय, जल निकास तंत्र का विकास, भू संरक्षण, बचाव व राहत कर्मियों का प्रशिक्षण, आपदा मित्रों की फौज तैयार करना, सुरक्षित आश्रय स्थलों का निर्माण, स्वास्थ्य सेवाओं का सुदृढ़ीकरण जैसे कार्य तय समय पर पूरे किए जाने चाहिए।

दीर्घकालिक उपाय : दीर्घकालिक उपायों में सबसे महत्वाकांक्षी नदी जोड़ो परियोजना मानी जाती है। बिहार में अभी 18 नदियों को जोड़ने की योजना पर काम चल रहा है। इससे पानी का समुचित प्रबंधन किया जा सकेगा। बाढ़ और सुखाड़ दोनों में यह कारगर साबित हो सकता है।

क्या कहते हैं विशेषज्ञ : बिहार में आनेवाली सालाना बाढ़ पर डॉ. दिनेश मिश्र ने बहुत गहरा अध्ययन किया है। वे कहते हैं– 'अगर हम पहाड़ों पर जंगल न काटें, नदी के इर्द–गिर्द खाली जगह में बस्तियां न बसाएं, पानी के कुदरती बहाव के रास्ते को न रोकें, तो बाढ़ से होनेवाले नुकसान को कम किया जा सकता है। आपदाएं हमें आत्ममंथन का भी मौका देती हैं। इस हालात के लिए क्या हम दोषी नहीं? प्रकृति से खिलवाड़ बंद करना होगा। प्रकृति को हम जो दे रहे, वही वह सूद सहित लौटा रही। नदियों के साथ हमें जीना सीखना होगा।

काम की बात :
बाढ़ आने से पहले क्या किया जाए? बाढ़ से निपटने की तैयारी के लिए आपको निम्न बातों को ध्यान में रखना चाहिए:

- बाढ़ प्रवण क्षेत्रों में तब तक निर्माण से बचना चाहिए जब तक कि आपको अपने घर की मंजिल–तल बढ़ाने अथवा उसे सुदृढ़ करने की आवश्यकता न हो।
- यदि बाढ़ आने की आशंका रहती हो तो भट्टी (फर्निस) जल तापक (वाटर हीटर) तथा इलेक्ट्रिक पैनल (बिजली बोर्ड) को किसी ऊंचे स्थान पर रखें।
- अपने घर की नालियों में बाढ़ के पानी को घुसने से रोकने के लिए मोरी की जालियों (सीवर ट्रैप्स) में चेक वाल्व लगाना।
- अपने समुदाय अधिकारियों को यह पता लगाने के लिए संपर्क करना कि क्या वे आपके क्षेत्र में घर में बाढ़ के पानी को घुसने से रोकने के लिए अवरोधक बांधों, बीमों तथा बाढ़ से बचने हेतु दीवारों (फ्लड वाल्स) का निर्माण करने की योजना बना रहे हैं।
- रिसाव (सीपेज) को रोकने के लिए अपने बेसमेन्ट में वाटर प्रूफिंग कम्पाउंड से दीवारों को सील करना।

यदि बाढ़ आपके क्षेत्र में आने वाली हो तो आपको निम्न बातें ध्यान में रखनी चाहिए :

- सूचना के लिए रेडियो सुनना या टेलीविजन देखना।
- आपातकालीन किट हमेशा अपने पास रखें जिसमें एक छोटा रेडियो, टॉर्च, बैट्री, मजबूत रस्सी, माचिस, मोमबत्ती, पीने का पानी, सूखा भोजन और आवश्यक दवाइयां हों।
- सजग रहें कि आकस्मिक बाढ़ भी आ सकती है। यदि आकस्मिक बाढ़ आने की कोई संभावना हो तो किसी ऊंचे स्थान पर तुरंत चले जाएं। ऊंचे स्थान जाने के लिए किसी हिदायत का इंतजार न करें।
- नदियों, नहरों, नालों, घाटियों तथा अचानक बाढ़ग्रस्त होनेवाले अन्य क्षेत्रों से परिचित रहे। इन क्षेत्रों में बारिश के बादल या भारी बारिश जैसी किसी विशिष्ट चेतावनी के साथ या उसके बिना आकस्मिक बाढ़ आ सकती है।

यदि बाढ़ की आशंका से घर खाली करने को तैयार हों, तो आपको निम्न प्रकार करना चाहिए :

(फाइल फोटो, बिहार राज्य आपदा प्रबंधन प्राधिकरण के अर्काइव से)

- अपने घर को सुरक्षित करें। यदि आपके पास समय है तो घर के बाहर रखा आउटडोर फर्नीचर घर में लाएं। जरूरी चीजों को किसी ऊपरी तल पर ले जाएं। कीमती वस्तुएं, महत्वपूर्ण दस्तावेज आदि वाटरप्रूफ बैग में रखें।
- उपयोगी सुविधाओं के मेन स्विचों या वाल्वों को तब तुरंत बंद कर दें, जब आपको ऐसा करने को कहा जाए। बिजली के उपकरणों को डिस्कनेक्ट, बिजली से अलग कर दें। यदि आप गीले हों अथवा पानी में खड़े हों तो बिजली के उपकरणों को न छुएं।

यदि आपको अपना घर छोड़ना पड़े तो बाढ़ में से सुरक्षित निकलने के लिए इन जरूरी बातों को याद रखें :

- बहते पानी में न चलें, 6 इंच की गहराई वाले बहते पानी में आप गिर सकते हैं। यदि आपको पानी में चलना हो तो वहां चलें जहां पानी बह न रहा हो। अपने आगे जमीन की सतह की मजबूती को जांचने के लिए छड़ी का प्रयोग करें।
- बाढ़वाले इलाकों में ड्राइविंग न करें। यदि बाढ़ का पानी आपकी कार के आस–पास जमा हो जाए तो कार को वहीं छोड़ दें तथा यदि आप ऐसा सुरक्षित रूप से कर सकें तो तुरंत किसी ऊंचे स्थान पर चले जाएं क्योंकि आप और आपका वाहन पानी में तेजी से बह सकता है।
- बच्चों को बाढ़ के पानी के पास खेलने से रोकें। सांपों व अन्य जहरीले जंतुओं से दूर रहें। उबला हुआ पानी पियें।

(**श्रोत :** एनडीएमए, ओआरएफ)

गतिविधियां : बाढ़ प्रबंधन प्लेटफार्म की बैठक

राज्य स्तर पर गठित बाढ़ प्रबंधन प्लेटफार्म की दूसरी बैठक 06 जुलाई, 2022 को प्राधिकरण सभागार में हुई। इसमें संबंधित तमाम विभागों और संस्थानों के प्रतिनिधि शामिल हुए। बैठक में बाढ़ प्रबंधन के लिए सूचना प्रौद्योगिकी के व्यापक इस्तेमाल पर बल दिया गया। नवीनतम तकनीक जैसे इंटरनेट ऑफ थिंग्स, वर्चुअल रियलिटी, रिमोट सेंसिंग, सैटेलाइट इमेजेरी इत्यादि का समावेश कर बाढ़ से होने वाली प्रति वर्ष जान–माल की हानि में कमी लाई जा सकती है।बैठक में आइएजी द्वारा जॉइंट रैपिड नीड एसेसमेंट (जेआरएनए) पर एक प्रजेंटेशन दिया गया। इस पर व्यापक रूप से चर्चा हुई। जेआरएनए फार्म को संशोधित कर उसे और सरल बनाने का प्रस्ताव दिया गया। एआरवीआर फर्म द्वारा वर्चुअल रियलिटी तकनीक का आपदा प्रबंधन में विस्तृत इस्तेमाल हेतु प्रस्तुतिकरण दिया गया जो काफी सराहनीय था। प्राधिकरण द्वारा उनसे पॉयलट तौर पर कियोस्क स्थापित करने हेतु एक प्रस्ताव देने कहा गया। फर्म ने यह प्रस्ताव प्राधिकरण को उपलब्ध भी करा दिया है।

अर्बन फ्लड गाइडलाइन के लिए ड्राफ्टिंग कमिटी की बैठक

शहरों में बाढ़ (अर्बन फ्लड) की स्थिति से निबटने के लिए बिहार राज्य आपदा प्रबंधन प्राधिकरण एक प्रभावी मार्गदर्शिका (गाइडलाइन) बनाने की दिशा में कार्य कर रहा है। इसके

लिए ड्राफ्टिंग कमेटी की एक बैठक जुलाई माह में संपन्न हुई। अर्बन फ्लड गाइडलाइन को जल्द ही अंतिम रूप दे दिया जाएगा।

प्राधिकरण की अन्य महत्वपूर्ण गतिविधियां

बिहार राज्य आपदा प्रबंधन प्राधिकरण के माननीय उपाध्यक्ष डॉ उदय कांत मिश्र, सदस्यद्वय श्री पीएन राय और श्री मनीष वर्मा के मार्गदर्शन व सानिध्य में प्राधिकरण ने जुलाई, 2022 में कई महत्वपूर्ण गतिविधियां संचालित की। बाढ़ पूर्व तैयारियां, वज्रपात से बचाव, सड़क दुर्घटनाओं की रोकथाम, सुरक्षित तैराकी कार्यक्रम, दिव्यांगजनों के आपदा जोखिम न्यूनीकरण और अस्पतालों में अग्नि सुरक्षा कार्यक्रम समेत कई कार्य संपन्न किए गए। इनके अतिरिक्त अधिकारियों के प्रशिक्षण व स्वयंसेवकों के क्षमतावर्धन का कार्य भी आलोच्य अवधि में निरंतर जारी रहा। प्रस्तुत है प्राधिकरण की महत्वपूर्ण गतिविधियों की एक झलक :

सुरक्षित तैराकी कार्यक्रम को लेकर युवाओं में उत्साह

बिहार राज्य आपदा प्रबंधन प्राधिकरण की ओर से चलाए जा रहे सुरक्षित तैराकी एवं जीवनरक्षक कौशल प्रशिक्षण कार्यक्रम को लेकर युवाओं में खासा उत्साह देखा जा रहा। इस कार्यक्रम के तहत छह से 18 आयु वर्ग के बालक–बालिकाओं का प्रशिक्षण जुलाई महीने में गया जिले के फतेहपुर, वजीरगंज और टनकुप्पा प्रखंडों में आयोजित किया गया। जिला प्रशासन, राष्ट्रीय अंतर्देशीय नेविगेशन संस्थान (नीनी) के प्रशिक्षित मास्टर ट्रेनर के सहयोग से संपन्न हुआ। तैराकी का यह 12 दिवसीय प्रशिक्षण प्रखंडों के अंतर्गत चयनित घाटों पर बनाए गए अस्थाई तरणताल में संपन्न किया गया। कुल 180 बालक–बालिकाओं को तैराकी व जीवनरक्षक कौशल का प्रशिक्षण दिया गया। इस प्रकार अभी तक पूरे राज्य में 1138 बालक बालिकाओं को तैराकी व जीवनरक्षक कौशल का प्रशिक्षण प्रदान किया जा चुका है।

क्र0 सं0	जिला का नाम	प्रखण्ड	प्रशिक्षण की तिथि (जुलाई 2022)	बैचों की संख्या	सफलता पूर्वक प्रशिक्षण प्राप्त करने वाले बालकों/बालिकाओं एवं छात्रों, छात्राओं की संख्या (निम्नलिखित प्रखंडों के अंचलाधिकारियों/ मास्टर ट्रेनर्स से दूरभाष से प्राप्त सूचना के अनुसार)
1.	गया	फतेहपुर	05.07.2022 से 16.07.2022 (30 बालकों)	01	30
			17.07.2022 से 28.07.2022 (30 बालकों)	01	30
2	गया	वजीरगंज	05.07.2022 से 16.07.2022 (30 बालकों)	01	30
			19.07.2022 से 30.07.2022 (30 बालकों)	01	30
3	गया	टनकुप्पा	20.07.2022 से 31.07.2022 (60 बालकों)	02	60
				कुल	180

सुरक्षित तैराकी कार्यक्रम की समीक्षा

डूबने की घटनाओं का अध्ययन करेगी विशेषज्ञ एजेंसी

राज्य भर में चलाए जा रहे सुरक्षित तैराकी कार्यक्रम के क्रियान्वयन में आ रही दिक्कतों और उसे दूर करने के उपायों पर परिचर्चा का आयोजन किया गया। प्राधिकार के माननीय सदस्य श्री पी.एन. राय की अध्यक्षता में 18 जुलाई को हुई इस बैठक में पटना, वैशाली, बेगूसराय और खगड़िया जिला के अधिकारियों और मास्टर ट्रेनर्स ने हिस्सा लिया। बैठक में प्राधिकरण के उपाध्यक्ष डॉ. उदय कांत मिश्र ने विभिन्न जिलों में डूबने की बढ़ती घटनाओं का अध्ययन विशेषज्ञ एजेंसी से कराने का निर्देश दिया। साथ ही उक्त अध्ययन से प्राप्त नतीजों के आधार पर बिहार सरकार के खनन सचिव को अवगत कराने का निर्देश भी दिया।

इस बैठक में सुरक्षित तैराकी कार्यक्रम में पंचायतों की भागीदारी, प्रशिक्षण स्थल पर आवश्यक सामग्रियों की उपलब्धता, मुखिया का पर्यवेक्षण और मानदेय भुगतान पर चर्चा की गई। समीक्षा के दौरान बताया गया कि प्राधिकरण के स्तर पर डूबने की घटनाओं की रोकथाम के संबंध में एक स्थिति रिपोर्ट का प्रारूप तैयार किया गया है। जल्द ही इसका मुद्रण करवाकर जिले एवं अंचल स्तर के संबंधित पदाधिकारियों को उपलब्ध कराया जाएगा। वैशाली, बेगूसराय एवं खगड़िया जिलों के मास्टर ट्रेनर्स द्वारा समुदाय स्तर पर संचालित किए जा रहे कार्यक्रमों में मास्टर ट्रेनर्स का मानदेय भुगतान क्षमतावर्द्धन मद से कराए जाने का सुझाव श्री स्वप्निल, प्रभारी, आपदा प्रबंधन, वैशाली द्वारा दिया गया। उन्होंने वैशाली जिले के महनार प्रखंड के मास्टर ट्रेनर्स के 06 बैचों के बकाया मानदेय राशि का भुगतान शीघ्र किए जाने हेतु अंचल अधिकारी, महनार को अग्रेतर कार्रवाई करने को कहा। बैठक में अंचल अधिकारियों को निदेश दिया गया कि प्रशिक्षण स्थल पर दूरस्थ गांवों/पंचायतों से प्रशिक्षण प्राप्त करने के लिए आने वाले बालक/बालिकाओं के लिए दूरी का आकलन करके जिले के माध्यम से प्राधिकरण को अवगत कराएंगे। यदि वाहन उपलब्ध कराने की आवश्यकता महसूस होगी तो प्राधिकरण स्तर से निर्णय लिया जाएगा।

प्रखंडों में भूकंप सुरक्षा क्लीनिक की होगी स्थापना

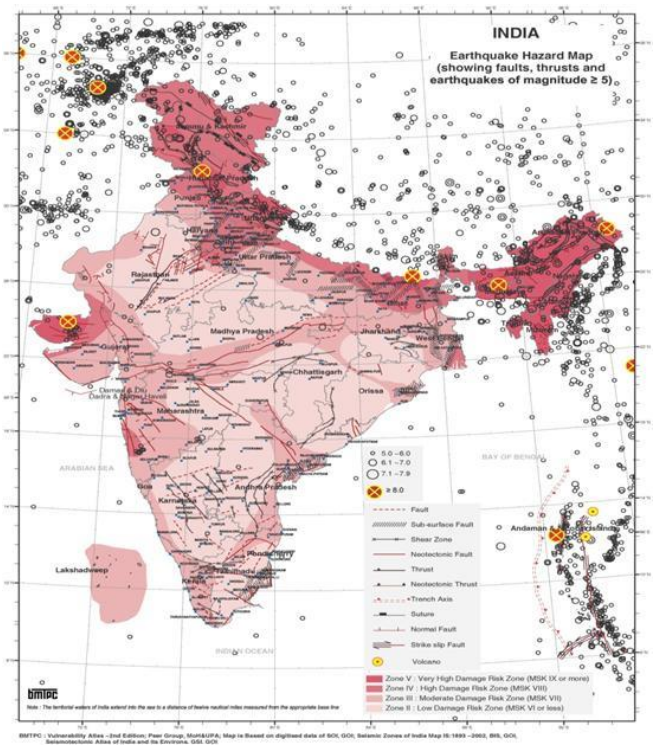

राज्य में विभिन्न आपदाओं से होनेवाले जान–माल के नुकसान की रोकथाम के लिए बिहार राज्य आपदा प्रबंधन प्राधिकरण लगातार प्रयासरत है। आपदाओं से बचाव के लिए विस्तृत प्रोजेक्ट के एक प्रस्ताव का प्रजेंटेशन माननीय उपाध्यक्ष और माननीय सदस्य के समक्ष किया गया। इसमें प्रखंड स्तर पर भूकंप सुरक्षा क्लीनिक की स्थापना और बेयरफुट टेक्नीशियन प्रशिक्षण से संबंधित प्रस्ताव पर सहमति दी गई।

क्या है भूकंप क्लीनिक : भूकंप से तबाही का एक लंबा इतिहास राज्य में रहा है। राज्य के कई जिले भूकंप के सर्वाधिक खतरेवाली श्रेणी में आते हैं। धरती डोलने से जान–माल का व्यापक नुकसान होता है। इमारतों और आधारभूत संरचनाओं की बड़े पैमाने पर क्षति होती है। इसका एक बड़ा कारण हमारे घरों का भूकंपरोधी ना होना है। हालात से उबरने के लिए ही प्रखंडों में भी भूकंप सुरक्षा क्लीनिक की स्थापना का प्रस्ताव है। दरभंगा, सीतामढ़ी सहित कई जिलों में भूकंप सुरक्षा क्लीनिक सह परामर्श केंद्र का निर्माण प्रगति पर है। पॉलिटेक्निक व इंजीनियरिंग कॉलेजों में इस केंद्र की स्थापना हेतु विज्ञान एवं प्रौद्योगिकी विभाग के साथ समन्वय किया गया है। इस केंद्र में आकर कोई भी व्यक्ति नए अथवा पुराने भवनों को कैसे भूकंपरोधी बनाया जाए इसकी जानकारी हासिल कर सकता है। वास्तविक आकार के भूकंपरोधी भवनों का सुदृढ़ीकरण देखा जा सकता है। (मैप साभार : एनडीएमए)

अनुभवी राजमिस्त्रियों का प्रशिक्षण

अनुभवी राजमिस्त्रियों के प्रशिक्षण के प्रस्तावित कार्यक्रम के संबंध में एनएसडीसी से समन्वय का कार्य किया जा रहा है। एनएसडीसी के प्रतिनिधियों ने सूचित किया है कि वह एक विस्तृत प्रस्ताव तैयार करने में लगे हैं और इसके लिए कम से कम दो माह का समय और लग सकता है। साथ ही एनएसडीसी ने पूर्व की तरह अनुभवी राजमिस्त्रियों का प्रशिक्षण चलाते रहने की भी सलाह दी है। नेशनल इंस्टीट्यूट ऑफ टेक्नोलॉजी, रायपुर के द्वारा शेक टेबल का निर्माण कार्य प्रगति पर है। इंस्टीट्यूट के प्रोफेसर गोवर्धन भट्ट से इस बाबत संवाद लगातार जारी है। एनआईटी, रायपुर की ओर से शेष राशि विमुक्त करने का अनुरोध किया गया है।

विपदा में साथ खड़े मिलेंगे 'आपदा मित्र'

गांवों में युवाओं की फौज होगी तैयार, सामुदायिक स्वयंसेवकों के प्रशिक्षण पर जोर

आपदाओं में जब आप घिरे हों तो मदद के लिए सबसे पहले परिवार और फिर समाज आगे आता है। राज्य हर साल कई तरह की आपदाओं का सामना करता है। सुदूर गांवों–पंचायतों में संसाधनों या कुशल कर्मियों के पहुंचने में समय लग सकता है। हादसे के बाद का हर सेकंड कीमती होता है। ऐसे में अगर गांव–पंचायत के ही चुनिंदा युवाओं को आपदाओं से लड़ने और बचने–बचाने का जरूरी ज्ञान और हुनर का प्रशिक्षण दिया जाए तो, ये अपने–अपने क्षेत्र को आपदाओं से सुरक्षित रख सकते हैं। संकट की घड़ी में ऐसे आपदा मित्र हमेशा तैयार मिलेंगे। इसी उद्देश्य से प्रशिक्षण के माध्यम से बिहार राज्य आपदा प्रबंधन प्राधिकरण राज्य के नौजवानों को प्रशिक्षित कर आपदाओं से लड़ने के लिए तैयार कर रहा है। इसी क्रम में बीते 25 जुलाई से 5 अगस्त तक पूर्वी चंपारण जिले के कुल 47 स्वयंसेवकों को 12 दिवसीय प्रशिक्षण शिविर में प्रशिक्षित किया गया। अब तक पूर्णिया, मुजफ्फरपुर, पूर्वी चंपारण, पश्चिमी चंपारण और अररिया जिले के कुल 563 सामुदायिक स्वयंसेवकों को प्रशिक्षित किया जा चुका है।

योजनाबद्ध और कारगर तरीके से लागू किया जाएगा आपदा मित्र कार्यक्रम

सामुदायिक स्वयंसेवक (आपदा मित्र) कार्यक्रम को योजनाबद्ध और कारगर तरीके से लागू करने के संबंध में बिहार राज्य आपदा प्रबंधन प्राधिकरण के माननीय सदस्य श्री पी.एन. राय की अध्यक्षता में 29 जुलाई को एक बैठक प्राधिकरण सभाकक्ष में हुई। राज्य के युवाओं को प्रशिक्षित कर आपदाओं से लड़ने को तैयार करने के लिए विभिन्न सरकारी व गैर सरकारी संस्थाओं के साथ बैठक में विचार–विमर्श किया गया। इस संबंध में आवश्यकताओं का आकलन कर मांग संबंधी प्रस्ताव तैयार करने का निर्देश माननीय सदस्य ने दिया। इसके अंतर्गत नागरिक सुरक्षा एवं विशेष सशस्त्र बल, कटिहार में प्रशिक्षण अगले माह तक शुरू किया जाना है। इस बाबत आवश्यक दिशा निर्देश दिए गए।

आपदा मित्र राष्ट्रीय कार्यशाला में सहभागिता

आपदा मित्र कार्यक्रम को और ज्यादा प्रभावशाली और कारगर बनाने के लिए एमआईएस डेटाबेस और ऐप बीते 22 जुलाई को बेंगलुरु में लांच किए गए। इस नई तकनीक के माध्यम से सभी स्वयंसेवकों (वॉलंटियर) का डेटा ऐप के माध्यम से कभी भी और कहीं भी देखा जा सकता है। इससे पूरे कार्यक्रम की निगरानी और सुचारू ढंग से की जा सकेगी। सभी वॉलंटियर का जीवन बीमा भी कराए जाने पर चर्चा की गई। कार्यशाला में बिहार राज्य आपदा प्रबंधन प्राधिकार की भी सहभागिता रही। प्रजेंटेशन के माध्यम से राज्य के वॉलंटियर की गतिविधियों की जानकारी दी गई। इसमें उनके द्वारा आपदा जोखिम न्यूनीकरण के लिए किए गए सराहनीय कार्य एवं भविष्य में इनकी उपयोगिता के संबंध में प्रकाश डाला गया।

दुर्घटनाओं से बचाव के लिए जागरूकता एवं प्रशिक्षण

बिहार राज्य आपदा प्रबंधन प्राधिकरण के बैनर तले एनसीसी उड़ान, एसडीआरएफ और एम्स, पटना के सहयोग से एनसीसी कैडेटों के लिए जागरूकता कार्यक्रम का आयोजन किया गया। एनसीसी भवन, राजेंद्र नगर, पटना में आयोजित शिविर में सड़क सुरक्षा के उपायों और प्राथमिक उपचार की जानकारी दी गई। साथ ही अन्य प्राकृतिक व मानवजनित आपदाओं के बारे में जागरूकता कार्यक्रम चलाया गया। इस दौरान आपदाओं से बचाव के लिए मॉक ड्रिल का आयोजन भी किया गया। कार्यक्रम में सड़क दुर्घटनाओं को रोकने के लिए जागरूकता वाले वीडियो संदेश कैडेटों को दिखाए गए। अस्पताल पूर्व चिकित्सा के लिए उन्हें प्रशिक्षित किया गया। जुलाई महीने में सासाराम, बरौनी और पटना समेत कई जगहों पर जागरूकता सह प्रशिक्षण शिविर का आयोजन किया गया इसमें कुल 2275 प्रतिभागियों को प्रशिक्षित किया गया।

आपदा में कैसे करें पशुओं की सुरक्षा व देखभाल

पशुधन सहायकों का तीन दिवसीय प्रशिक्षण संपन्न

आपदाओं से सिर्फ मानव ही नहीं बल्कि पशु भी प्रभावित होते हैं। आपदाओं की स्थिति में मानव के साथ–साथ पशुधन की भी बड़े पैमाने पर क्षति होती है। आपदाओं को घटित होने से पूरी तरह रोका तो नहीं जा सकता है, लेकिन पूर्व तैयारी और जागरूकता के सहारे इनसे होनेवाली क्षति को कम जरूर किया जा सकता है। ऐसे ही पशुधन सहायकों एवं पशुधन पर्यवेक्षकों का कौशल विकास एवं आपदाओं के खतरों की पहचान कर पशुधन की सुरक्षा का समुचित प्रबंधन किया जा सकता है।

इसी क्रम में बिहार राज्य आपदा प्रबंधन प्राधिकरण द्वारा पशु एवं मत्स्य संसाधन विभाग एवं बिहार पशु विज्ञान विश्वविद्यालय के सहयोग से फरवरी, 2021 में प्रशिक्षण कार्यक्रम आरम्भ किया गया। इस प्रशिक्षण में पशुधन सहायकों को बहु–आपदाओं की स्थिति में आपदा के पहले, आपदा के दौरान एवं आपदा के बाद कैसे पशुओं की सुरक्षा एवं प्रबंधन किया जाए, की जानकारी दी जाती है। माह जुलाई, 2022 तक कुल 14 बैचों में 355 पशुधन सहायकों एवं पशुधन पर्यवेक्षकों को प्रशिक्षित किया गया है। जुलाई माह में दो सत्रों में कुल 51 लोगों को प्रशिक्षण दिया गया।

पुलिस व प्रशासनिक अधिकारियों को आपदा प्रबंधन की दी जानकारी

बिपार्ड के सहयोग से प्राधिकरण ने कुल 119 पदाधिकारियों को दिया प्रशिक्षण

बिहार इंस्टीट्यूट ऑफ पब्लिक एडमिनिस्ट्रेशन एंड रूरल डेवेलपमेंट (बिपार्ड) के सहयोग से बिहार राज्य आपदा प्रबंधन प्राधिकरण सरकारी अधिकारियों के संवेदीकरण का कार्यक्रम निरंतर चला रहा। आपदा जोखिम न्यूनीकरण एवं प्रबंधन विषय पर अलग–अलग सत्रों में बिहार पुलिस सेवा और बिहार प्रशासनिक सेवा के अधिकारियों का प्रशिक्षण कार्यक्रम संपन्न हुआ। अलग–अलग बैच में इन प्रशिक्षण शिविरों में कुल 119 पदाधिकारियों ने हिस्सा लिया। आपदा प्रबंधन प्राधिकरण निरंतर ऐसे प्रशिक्षण कार्यक्रम चलाता रहता है।

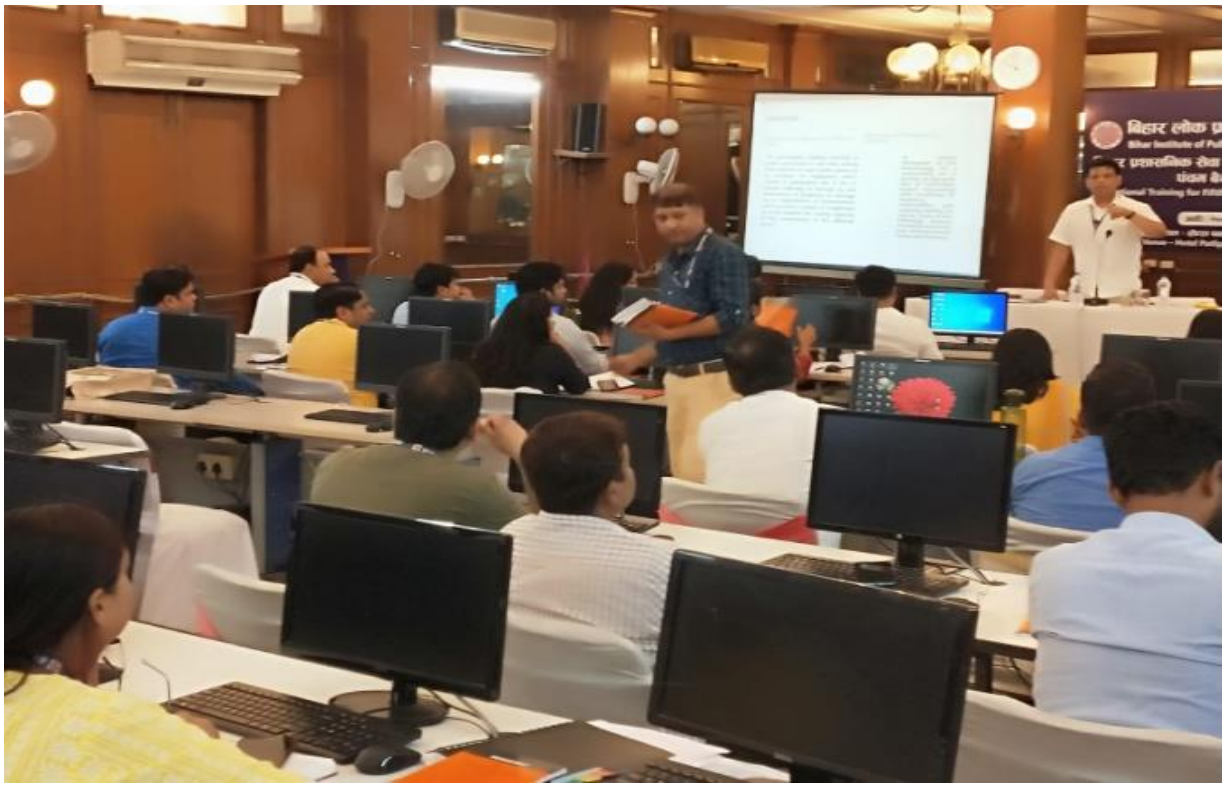

विगत 12–13 जुलाई को बिहार प्रशासनिक सेवा के 41 नवनियुक्त पदाधिकारियों का 02 दिवसीय प्रशिक्षण होटल पाटलिपुत्र अशोक में संपन्न हुआ। प्राधिकरण स्तर से प्रशिक्षुओं को प्रशिक्षण सामग्री उपलब्ध कराई गई। उक्त प्रशिक्षण के दौरान प्रतिभागियों को बिहार में होनेवाली आपदाओं, आपदा प्रबंधन की बदलती भूमिका एवं संरचना, आपदा प्रबंधन अधिनियम, आपदा जोखिम न्यूनीकरण रोड मैप, जिला आपदा प्रबंधन योजना, बाढ़–अग्नि–पेयजल–सुखाड़ एवं अस्पतालों में अग्नि सुरक्षा प्रबंधन से संबंधित मानक संचालन प्रक्रिया आदि के बारे में अवगत कराया गया।

आपदाओं से लड़ने में पुलिस की भूमिका अहम

इसी तरह जुलाई माह में 10वें एवं 11वें बैच में बिहार पुलिस सेवा के कुल 78 पदाधिकारियों को प्रशिक्षण दिया गया। 11वें बैच के प्रशिक्षण कार्यक्रम के समापन अवसर पर प्राधिकरण के माननीय सदस्य श्री पी. एन. राय एवं श्री सुनील कुमार, अपर पुलिस महानिदेशक (विशेष शाखा) के द्वारा प्रतिभागियों का उत्साहवर्द्धन किया गया। साथ ही प्रमाण पत्र प्रदान किया गया। इस प्रकार अभी तक कुल 295 पुलिस सेवा के पदाधिकारियों ने प्रशिक्षण प्राप्त कर लिया है। इस प्रशिक्षण में मानवजनित आपदाओं में पुलिस की भूमिका, प्राकृतिक आपदाओं में पुलिस की भूमिका, भीड़ प्रबंधन, अस्पताल पूर्व चिकित्सा, अग्नि एवं भूकम्प सुरक्षा पर मॉकड्रिल आदि के बारे में विशेषज्ञों के द्वारा जानकारी दी गयी।

बिहार पुलिस सेवा के अधिकारी राज्य, जिला एवं अनुमंडल स्तर पर विधि व्यवस्था संधारण, अपराध नियंत्रण एवं आमजन को सुरक्षा प्रदान करने में महत्वपूर्ण भूमिका निभाते ही हैं, मानवजनित एवं प्राकृतिक आपदाओं में भी राज्य की ओर से प्रथम प्रतिक्रियादाता (फर्स्ट रिस्पांडर) का कार्य करते हैं। विशेषकर मानवजनित आपदाओं, जैसे भगदड़, सड़क/रेल/हवाई दुर्घटनाओं एवं अगलगी में इनकी भूमिका प्राथमिक महत्व की हो जाती है। साथ ही वे प्राकृतिक आपदाओं की दशा में राहत एवं बचाव कार्यों के सुचारू संचालन में महत्वपूर्ण भूमिका निभाते हैं।

पुलिस प्रशिक्षण मॉड्यूल पर चर्चा

बिहार पुलिस के जवानों और पदाधिकारियों को आपदा जोखिम न्यूनीकरण एवं प्रबंधन विषय पर प्रशिक्षित करने के उद्देश्य से 27 जुलाई को बिहार राज्य आपदा प्रबंधन प्राधिकरण के माननीय सदस्य श्री पी. एन. राय की अध्यक्षता में एक बैठक संपन्न हुई। बैठक में प्रशिक्षण मॉड्यूल के निर्माण की मौजूदा स्थिति, प्रशिक्षकों की उपलब्धता, बजट का प्रावधान, प्रशासनिक व्यवस्था आदि पर विचार–विमर्श किया गया। बिहार पुलिस अकादमी में आपदा प्रबंधन विषय का प्रशिक्षण और सभी पुलिस प्रशिक्षण केंद्रों में अनुमोदित प्रशिक्षण मॉड्यूल को लागू करने पर चर्चा हुई। बैठक में श्री आलोक राज, पुलिस महानिदेशक (प्रशिक्षण) विशेष तौर पर मौजूद थे।एनडीआरएफ, एसडीआरएफ, बिपार्ड, बीपीए के प्रतिनिधियों ने भी बैठक में हिस्सा लिया।

चलिए, सम्हल कर.....जान है, तो जहान है !

सड़क सुरक्षा के उपायों की दी जानकारी, अस्पताल पूर्व चिकित्सा विषय पर प्रशिक्षण

बिहार राज्य आपदा प्रबंधन प्राधिकरण के तत्वावधान में परिवहन विभाग और एनडीआरएफ के सहयोग से ऑल इंडिया रोड ट्रांसपोर्ट वर्कर्स फेडरेशन, बिहार ईकाई के विभित्र जिलों के प्रतिनिधियों की एक प्रशिक्षण/संवेदीकरण कार्यशाला 29 जुलाई को प्राधिकरण सभागार में हुई। सड़क सुरक्षा के उपायों और विभिन्न नियमों की जानकारी देने के साथ ही प्रतिभागियों को अस्पताल पूर्व चिकित्सा का प्रशिक्षण भी दिया गया। इस अवसर पर प्राधिकरण के माननीय सदस्य, श्री पी.एन. राय ने प्रतिभागियों को संबोधित किया। श्री राजकुमार झा, महासचिव, ऑल इंडिया रोड ट्रांसपोर्ट वर्कर्स फेडरेशन ने कार्यक्रम के सफल आयोजन में महत्वपूर्ण योगदान दिया। उक्त कार्यक्रम में सड़क सुरक्षा के चार मुख्य स्तंभ यानी "4–ई" यथा एजुकेशन (शिक्षा), इंजीनियरिंग (अभियांत्रिकी), एन्फोर्समेंट (प्रवर्तन) और इमरजेंसी केयर (आपातकालीन देखभाल) के बारे में लोगों को बताया गया। सड़क दुर्घटनाओं की रोकथाम के उपायों (क्या करें, क्या नही करें) के बारे में प्रजेंटेशन के माध्यम से जानकारी दी गई। सड़क सुरक्षा हेतु आवश्यक नियमों जैसे–कम उम्र के बालक/बालिकाओं को वाहन न चलाना, वाहन चलाते समय हेलमेट का उपयोग अवश्य करना, सड़क पार करते समय दाहिने–बांये एवं सामने देखकर सड़क पार करना, तीव्र गति से वाहन न चलाना, वाहन चलाते समय मोबाइल एवं ईयर फोन का उपयोग न करना आदि के बारे में संवेदीकरण किया गया।

राज्य में 1 सितम्बर, 2019 से लागू किए नये मोटर वाहन एक्ट एवं संशोधित जुर्माने/दंड के बारे में जानकारी प्रदान की गई। प्रतिभागियों को गुड समैरिटन (अच्छा नेक आदमी) की भूमिका, सड़क दुर्घटनाओं में मृतकों एवं घायलों को परिवहन विभाग की ओर से दी जानेवाली मुआवजा राशि आदि के बारे में अवगत कराया गया। प्रशिक्षण के दौरान प्रतिभागियों को दुर्घटनास्थल पर बरती जाने वाली सावधानियों एवं अन्य सामान्य नियमों के बारे में, रक्तश्राव रोकने के उपायों, हड्डी टूटने की स्थिति में घायल व्यक्ति की सहायता के तरीके, दम घुटने जैसी स्थिति में प्राथमिक उपचार के तरीकों एवं सी.पी.आर. आदि के बारे में बताया गया।

दिव्यांगजन आपदा जोखिम न्यूनीकरण समिति की बैठक

आपदाओं में दिव्यांगजनों की सुरक्षा सुनिश्चित करने का महत्वाकांक्षी कार्यक्रम बिहार राज्य आपदा प्रबंधन प्राधिकरण ने अपने हाथों में लिया है। इस कार्य को गति देने के लिए प्राधिकरण स्तर पर गठित दिव्यांगजन आपदा जोखिम न्यूनीकरण समिति की बैठक 25 जुलाई को प्राधिकरण के माननीय सदस्य श्री पी एन राय की अध्यक्षता में हुई। इसमें प्रशिक्षण मॉड्यूल, क्षमतावर्द्धन और आवश्यकताओं के आकलन पर चर्चा हुई। बैठक में तय किया गया कि दिव्यांगजनों के साथ कार्य कर रही संस्थाओं और उनसे जुड़े शिक्षकों–प्रशिक्षकों आदि की जानकारी राज्य स्तर पर संकलित की जाए ताकि इस क्षेत्र में कार्य कर रहे अन्य हितभागियों को भी इस कार्यक्रम से जोड़ा जा सके। प्रशिक्षण हेतु दिव्यांगजनों का श्रेणीवार मॉड्यूल तैयार करने पर बल दिया गया।

बैठक में लिये गये निर्णय इस प्रकार हैं:–

1. दिव्यांगजन के साथ कार्य कर रहे संस्थाओं/प्रशिक्षकों आदि की जानकारी हेतु राज्य स्तर या राष्ट्रीय स्तर पर सूचनाओं का संकलन किया जाये जिससे कि इस क्षेत्र में कार्य कर रहे अन्य हितभागियों को कार्यक्रम से जोड़ा जा सके।

2. प्रशिक्षण संबंधी आवश्यकताओं के आकलन (टी.एन.ए.) हेतु प्राधिकरण प्राधिकरण स्तर पर दिनांक 11.08.2022 को एक कार्यशाला का आयोजन किया जाये।

3. प्रशिक्षण हेतु दिव्यांगजनों का श्रेणीवार मॉड्यूल तैयार किये जाने हेतु विभिन्न कार्यदायी संस्थाओं के साथ समन्वय स्थापित किया जाये।

4. दिव्यांगजनों के प्रशिक्षण हेतु प्रशिक्षकों को चिह्नित किये जाने में श्रेणीवार यथा, मूक–बधीर, दृष्टिहीन आदि अलग–अलग दिव्यांगताओं के आधार पर तैयार किया जाये।

5. उपरोक्त कार्यों के क्रियान्यवयन के साथ–साथ आपदा जोखिम न्यूनीकरण विषय पर पूर्व से प्रशिक्षित प्रशिक्षकों/विद्यालयों/संस्थाओं (बिहार दिवस से जुड़े कार्यक्रम के प्रतिभागियों) के साथ कुछ स्कूलों/संस्थाओं को चिह्नित कर जागरूकता एवं संवेदीकरण हेतु प्रशिक्षण प्रारंभ किया जाये।

एक नजर में जुलाई माह में हुए कार्यक्रमों की झलक

इंटर्न को छह सप्ताह का प्रशिक्षण : नई दिल्ली स्थित स्कूल ऑफ प्लानिंग एंड आर्किटेक्चर के दो छात्र बतौर इंटर्न बिहार राज्य आपदा प्रबंधन प्राधिकरण में 6 सप्ताह का प्रशिक्षण प्राप्त कर रहे हैं। द्वितीय वर्ष के ये दोनों छात्र रैपिड विजुअल स्क्रीनिंग (आरवीएस) कार्यक्रम के अंतर्गत प्राकृतिक आपदा संभाग में काम कर रहे हैं।

मुजफ्फरपुर डीडीएमपी की समीक्षात्मक बैठकः . मुजफ्फरपुर जिला के जिला आपदा प्रबंधन योजना (**डीडीएमपी**) की दिनांक 13 जुलाई को जिलाधिकारी, उप विकास आयुक्त तथा विभिन्न लाईन डिर्पाटमेंट के साथ समीक्षात्मक बैठक सम्पन्न हुई। जिलाधिकारी ने निदेश दिया कि आवश्यक परिवर्तन **डीडीएमपी** में एक और बैठक में कर लिया जाय तथा अगले माह इसे प्राधिकरण को अनुमोदनार्थ भेज दिया जाय।

डीएमआई के नवनियुक्त प्रोफेशनल्स को प्रशिक्षण : डिजास्टर मैनेजमेंट इंस्टीटयूट **(डीएमआई),** पटना में नवनियुक्त आपदा प्रबंधन के प्रोफेशनल्स के प्रशिक्षण का प्रस्ताव प्राप्त हुआ। निदेशानुसार दिनांक 14 जुलाई, 2022 को एक प्रशिक्षण कार्यक्रम बनाकर उनको प्रशिक्षित किया गया तथा एक सप्ताह तक उन्हें प्राधिकरण के प्रोफेशनल्स के साथ संलग्न कर दिया गया ताकि वे संस्थान के विभिन्न क्रियाकलापों तथा कार्यक्रमों को विस्तृत रूप से समझ सकें तथा भविष्य में उचित सहयोग प्रदान करने हेतु सक्षम हो सकें।

आईआईटी, पटना के साथ बैठक :. निदेशानुसार **आईआईटी,** पटना के साथ तकनीकी साझेदारी हेतु दिनांक 25.07.2022 को एक बैठक की गयी जिसमें श्री प्रो0 राजीव मिश्रा, कम्प्यूटर साइंस विभाग के साथ विस्तृत वार्ता हुई। प्राधिकरण के आपदा प्रबंधन के विभिन्न कार्यक्रमों का **आईआईटी** पटना के सहयोग से और भी बेहतर बनाया जा सकता है। अगली बैठक शीघ्र प्रस्तावित है।

मास मैसेजिंग : सर्वविदित है कि आपदाओं को हम पूरी तरह रोक तो नहीं सकते, परंतु बेहतर आपदा प्रबंधन से नुकसान को कम कर सकते हैं। विभिन्न आपदाओं के खतरे से लोगों को सचेत और सतर्क करने के लिए एडवायजरी के रूप में 'क्या करें, क्या न करें' की जानकारी एसएमएस के माध्यम से दी जाती है। प्राधिकरण में उपलब्ध विभिन्न मोबाइल नंबर (लगभग 36 लाख) पर सामूहिक संदेश संप्रेषण (मैसेजिंग) नियमित रूप से किये जाते हैं। अब तक करीब 60 हजार मास मैसेजिंग किया गया, जिसमें जीविका दीदी, आशा कार्यकर्ता, जिला परिषद्, सी0ओ0, डी0एम0 और आपदा प्रबंधन विभाग के कर्मियों, प्रशिक्षित मुखिया, सरपंच एवं लाभार्थी शामिल हैं।

अस्पतालों को सुरक्षित बनाने का अभियान जारी

राज्य भर के अस्पतालों को आग से सुरक्षित बनाने के उद्देश्य से बिहार राज्य आपदा प्रबंधन प्राधिकरण ने एक महत्वाकांक्षी अभियान की शुरुआत की है। इसके तहत अस्पतालों का कुल 16 बिंदुओं पर फायर सेफ्टी ऑडिट किया जा रहा है। अस्पताल अग्नि सुरक्षा कार्यक्रम के तहत जुलाई माह में राज्य के कुल 273 अस्पतालों का निरीक्षण किया गया। इनमें 27 सरकारी और 246 निजी अस्पताल शामिल थे। इस प्रकार अब तक राज्य के कुल 5409 अस्पतालों का अग्नि प्रवणता सूचकांक के आधार पर निरीक्षण (फायर सेफ्टी ऑडिट) किया जा चुका है।

माह जुलाई 2022 में अस्पतालों/नर्सिंग होमस् के भवनों में फायर ऑडिट का ऑकड़ा।

क्र0स0	जिला का नाम	कोविड अस्पताल			नन कोविड अस्पताल		
		सरकारी	निजी अस्पताल	कुल	सरकारी	निजी अस्पताल	कुल
1	पटना	0	0	0	5	32	37
2	नालंदा	0	0	0	0	8	8
3	रोहतास	0	0	0	0	8	8
4	भभुआ	0	0	0	3	0	3
5	भोजपुर	0	0	0	0	2	2
6	बक्सर	0	0	0	0	0	0
7	गया	0	0	0	0	14	14
8	जहानाबाद	0	0	0	0	0	0
9	अरवल	0	0	0	0	0	0
10	नवादा	0	0	0	0	10	10
11	औरंगाबाद	0	0	0	0	4	4
12	छपरा	0	0	0	0	7	7
13	सिवान	0	0	0	0	2	2
14	गोपालगंज	0	0	0	00	0	0
15	मुजफ्फरपुर	0	0	0	0	18	18
16	सीतामढ़ी	1	0	1	0	8	8
17	शिवहर	0	0	0	0	0	0
18	बेतिया	0	0	0	1	2	3
19	बगहा	0	0	0	0	0	0
20	मोतिहारी	0	0	0	0	21	21
21	वैशाली	0	0	0	0	14	14
22	दरभंगा	0	0	0	0	16	16
23	मधुबनी	0	0	0	0	7	7
24	समस्तीपुर	0	0	0	6	8	14
25	सहरसा	0	0	0	0	2	2
26	सुपौल	0	0	0	0	7	7
27	मधेपुरा	0	0	0	0	5	5
28	पूर्णिया	0	1	1	1	2	3
29	अररिया	0	0	0	2	4	6
30	किशनगंज	0	0	0	0	11	11
31	कटिहार	0	0	0	3	6	9
32	भागलपुर	1	2	3	0	4	4
33	नवगछिया	0	0	0	1	0	1
34	बाँका	0	0	0	0	5	5
35	मुंगेर	0	0	0	0	0	0
36	लखीसराय	0	0	0	0	2	2
37	शेखपुरा	0	0	0	1	1	2
38	जमुई	0	0	0	1	2	3
39	खगड़िया	0	0	0	0	10	10
40	बेगुसराय	0	0	0	1	1	2
कुल योग		2	3	5	25	243	268

unicef
for every child
World Health Organization
Help us to help you
नोवल कोरोनावायरस
(COVID-19)
खुद रहें सुरक्षित, दूसरों को रखें सुरक्षित
क्या करें और क्या ना करें
क्या करें
बार-बार हाथ धोएं। जब आपके हाथ स्पष्ट रूप से गंदे न हों, तब भी अपने हाथों को अल्कोहल - आधारित हैंड वॉश या साबुन और पानी से साफ करें
छींकते और खांसते समय, अपना मुंह व नाक टिशू/या कोहनी से ढकें
प्रयोग के तुरंत बाद टिशू को किसी बंद डिब्बे में फेंक दें
अगर आपको बुखार, खांसी और सांस लेने में कठिनाई है तो डॉक्टर से संपर्क करें। डॉक्टर से मिलने के दौरान अपने मुंह और नाक को ढंकने के लिए मास्क/कपड़े का प्रयोग करें
अगर आप में कोरोना वायरस के लक्षण हैं, तो कृपया राज्य हेल्पलाइन नम्बर 104 मंत्रालय, भारत सरकार की 24x7 हेल्पलाइन 1075/011-23978046 पर कॉल करें
भीड़-भाड़ वाली जगहों पर जाने से बचें
क्या न करें
यदि आपको खांसी और बुखार का अनुभव हो रहा हो, तो किसी के साथ संपर्क में ना आयें
अपनी आंख, नाक या मुंह को ना छूयें
सार्वजनिक स्थानों पर ना थूकें
हम सब साथ मिलकर कोरोनावायरस से लड़ सकते हैं
SHSBihar
BiharHealthDepartment
राज्य स्वास्थ्य समिति, बिहार
परिवार कल्याण भवन, शेखपुरा, पटना- 800 014
www.statehealthsocietybihar.org
@BiharHealthDepartment
mohfw.gov.in
@MoHFWIndia
@MoHFW_INDIA
mohfwindia